चर्मरोग सोरायसिस का समाचिकित्सा (Homeopathic) उपचार

सोरायसिस (Psoriasis) एक चर्मरोग है, जिसका उपचार बहुतही दीर्घकालीन चलनेवाला एवं कठीन है । इस रोगसे मुक्त हो पाना निहायतही मुश्किल है और लंबे समय तक का धैर्य अपेक्षित रहता है । सोरायसिस (Psoriasis)में त्वचा पर लाल रंगके चकत्ते उठते हैं जिस पर चांदी (Silver) रंगकी मोटी रुखी परत जमकर छिलके के स्वरुपमें झरने लगती है । सोरायसिस (Psoriasis)से पीड़ित व्यक्तिके चारों ओर मसलन ज़मीन पर, वस्त्र पर, Furniture पर झरी हुई रुखी चमड़ीकी परत (Scales) दिखाई देती है ।

सोरायसिस (Psoriasis)में चर्मकी कोशिकाओं (cells)का विकास त्वरित गतिसे होता है । सामान्यतः मानवीय शारीरकी बाहरी चमड़ीकी कोशिकाएं 25 से 30 दिनोंमें बदलती रहती हैं अर्थात हर 25 से 30 दिनोंमें हमारी बाहरी चमड़ी बदल जाती है , पुरानी चमड़ी का स्थान नई चमड़ी ले लेती है , मगर हमें इसका पताभी नहीं चलता । सोरायसिस (Psoriasis)में यही प्रक्रिया महज़ 7 दिनोंमें पूर्ण होती है । अतः चमड़ीमें जहाँ पर सोरायसिसके लक्षण दिखाई दें , उस स्थान पर चमड़ीकी कोशिकाओंका विकास बहुत तेज़ीसे होता है और वह तेज़ीसे झरती नज़र आती है । यह व्याधि स्पर्शजन्य या संक्रामक (Contagious, Infective) नहीं है , इस मर्ज़में सिर्फ शारीरिक प्रक्रिया तेज़ हो जाती है ।

कारण (reason) : शारीरिक प्रक्रिया तेज़ हो जानेका कारण अब तक वैज्ञानिकोंके हाथ नहीं लग पाया है । कुछ ऐसे कारणोंका पता लग पाया है जिससे सोरायसिस होनेकी शक्यता बढ़ जाती है , उदाहरणार्थ परिवारके किसी व्यक्तिमें अगर यह मर्ज़ अस्तित्व रखता होतो वंशानुगत (Hereditary) तौर पर परिवारमें उतर सकता है । जिन वयस्कों अथवा बच्चोंको बार-बार गले/कंठ/कंठनालीमें संक्रमण (infection)की शिकायत रहती हो । मोटापा , अवसाद , मानसिक तनाव , मदिरा एवं तंबाकू सेवन तथा ठंडी जल-वायुका प्रभावभी सोरायसिसके लिए प्रेरक साबित हो सकता है । कुछ बिमारीयोंमें उपयोग की जानेवाली खास औषधियां मसलन..... द्विध्रुवी विकार (Bipolar Disorders), उच्च रक्त चाप (High Blood Pressure) और मलेरिया रोधी दवाएं (Antimalarial drugs), एवं आयोडाइड (Iodide) आदि औषधियां । ऊपर सूचित किए गए कारण सोरायसिस रोगका प्रारंभ करनेमें या रोगकी तीव्रता बढ़ानेमें अहम् भूमिका निभाते हैं ।

सोरायसिसके कारण मरीज़को नेत्र संबंधित तकलीफें जैसेकि आँखका आना (Conjunctivitis), वर्त्मांतशोध (Blepharitis, पलकोंमें दाह) , यूवाइटिस (Uveitis) एवं गठिया या संधिवात (arthritis) , मोटापा (obesity) , मधुमेह (diabetes), उच्च रक्तचाप (Hypertension, High blood pressure) , हृदयरोग (heart disease) , पार्किंसंस रोग (Parkinson's disease) जैसी अन्य तकलीफें (Complications) होनेकी संभावना बनी रहती है ।

विशेषताएं (symptoms) : शरीर पर चमड़ीके कुछ खास हिस्सोंमें लाल रंगके चकते बनते हैं , जिनके ऊपर चांदी जैसे रंगकी सुखी मोटी चमड़ीकी परत बनकर वह छिलकेकी तरह बिखरने लगती है । जोडोंमें जकड़न-दर्द और सूजन, त्वचाका फट जाना, त्वचामेंसे रक्त निकलना, खुजली होना, त्वचामें दाह एवं सूजन, नाखूनका मोटे एवं कठोर (Rigid) हो जाना या निकल कर जुदा हो जाना ।

सोरायसिस (Psoriasis) कई प्रकारके पाए जाते हैं , जिनमें Plaque Psoriasis, Nail Psoriasis, Guttate Psoriasis, Inverse Psoriasis, Erythrodermic Psoriasis प्रमुख रूपसे पहचाने जाते हैं ।

निदान (Diagnosis) : सोरायसिसका निदान त्वचा पर मौजूद विशेषताओंको देखकर सरलतासे किया जा सकता है । मरीज़का इतिहासभी रोगनिदानमें सहायक साबित हो सकता है । दर्दीकी त्वचाके जीवित ऊतकोंकी जांच अर्थात Skin Biopsy भी की जाती है ।

उपचार (Treatment) : डॉक्टरी प्रणाली (एलोपैथी, allopathy)में सोरायसिस (Psoriasis)से रोगमुक्त होने के लिए कोई स्थायी कारगर उपाय उपलब्ध नहीं है । इस प्रणालीमें उपचारका प्रमुख हेतु होता है, चर्मकी कोशिकाओंका विकासदर मर्यादित करना, चर्मका प्रज्वलन, उत्तेजन एवं दाहको नियंत्रित करना । ऐसा करनेसे छिलकेके स्वरुपमें झरनेवाली

चमड़ीकी मोटी परतको कम किया जा सकता है । एलोपैथिक उपचार 3 तरीकेसे किया जाता है । Topical Application अर्थात त्वचा या जिल्द पर लगानेकी औषधि, प्रकाश चिकित्सा (Light Therapy) और प्रणालीगत दवाएं (Systemic Medications)

Topical applicationमें V topical, corticosteroids, vitamin D, Anthralin, topical Retinoids इत्यादिका उपयोग किया जाता है । प्रकाश चिकित्सा (Light Therapy) में सूर्यप्रकाश (Sunlight), UVB phototherapy की सहायता ली जाती है । Systemic medication में Retinoids, Methotrexate, Cyclosporine जैसी औषधियां Oral या Injections स्वरुपमें प्रयोग की जाती हैं । सोरायसिसके प्रकार, उसकी तीव्रता और शरीरमें व्याधिके विस्तारको ध्यानमें रखकर रोगी के लिए औषधिका चयन किया जाता है । यह ओषधियोंके कथित दुष्प्रभावके कारण दीर्घकालीन प्रयोग उचित नही है ।

Homeopathy में सोरायसिसका उपचार भिन्न द्रष्टिकोणसे किया जाता है । रोग/व्याधिके लक्षणोंको कम करने या उसके प्रभावको कम करके दर्दीको आराम पहुँचाने के बजाय मर्ज़को पूर्णतया निर्मूल करनेका अभिगम रखा जाता है । Homeopath (समाचिकित्सक) मरीज़की रोग सबंधित तमाम माहिती एकत्र करता है । रोगका प्रारंभ किन परिस्थितियोंमें हुआ ? किस तरह रोगकी तीव्रता बढ़ी ? किन हालातमें रोगकी तीव्रता बढ़ती या कम होती है ? मरीज़को भूतकालमें हुए रोग एवं व्याधिकी जानकारी । पारिवारिक सदस्योंकी भूतकालीन व्याधि संबंधित मालूमात । रोगीकी प्रकृति, मानसिक, शारिरीक (mental, emotional, psychological) परिस्थिति, उसकी पसंद-नापसंद, उसका वर्तन, आचार-विचार संबंधित माहिती एकत्र कर समाचिकित्सक उसका पृथ्थकरण करता है और उसके फलस्वरुप औषधिका चयन कर चिकित्सा प्रारंभ करता है। जैसा कि प्रारंभमें सूचित किया गया, सोरायसिससे मुक्त हो पाना बहुतही कठीन है, मरीज़को लंबे समय तक चिकित्सा/उपचार जारी रखना आवश्यक है ।

सोरायसिसकी चिकित्साके दौरान रोगीको बुखार, सर्दी, खांसी, गलेमें संक्रमण (Infection) जैसी सामान्य तकलीफोंकी शिकायत रह सकती है । इन तकलीफोंसे सोरायसिस निर्मूल करनेमें सहायता मिल सकती है, इसलिए दर्शाई गयी तकलीफोंका उपचार समाचिकित्सककी सलाह एवं सुचनकी अनुपस्थिति में न करें ।

खुद करके देखें : सोरायसिस या किसीभी चर्मरोगमें रोग प्रभावित स्थान पर फ़क्त Petroleum Jelly (Vaseline) का उपयोग करें । अन्य किसीभी प्रकारके मरहम या Lotion लगानेसे बचें । शरीर स्वच्छ रखें । स्नान करते वक्त साबुनका प्रयोग कम करें । रोग प्रभावित स्थानको प्रतिदिन कोमल सूर्यप्रकाशमें कुछ देर के लिए रखें । तंदुरस्ती प्रदान करने वाला भोजन लें । संभवतः शाकाहारी भोजन लें । पर्याप्त मात्रामें पानी पीएं । रोगकी विशेषताएँ जिन कारणोंसे बढ़ती हों उन से दूरी रखें ।

कृपया याद रखें कि सोरायसिस ऐसा रोग है जिससे मुक्त हो पाना संभव है । ज़रूरत है धैर्यपूर्ण उपचारकी और समाचिकित्सक (Homeopath) की सुचना अनुसार एहतियात बरतने की । अधिक जानकारी/मार्गदर्शन हेतु आप निम्नलिखित मोबाइल नम्बर एवं EMail पर संपर्क कर सकते हैं । आप सबको मानसिक एवं शारिरीक तंदुरस्ती प्राप्त हो ऐसी शुभकामना ।